सहयोग ₹ 10 प्रति महीना

भारतीय परिवार

हर कदम सत्य की ओर ....

भूमिका अंक (सांगठनिक वितरण हेतु) | प्रकाशन : महीने में 2 बार | सम्पर्क सूत्र : 8745026277 | ई-मेल : yuvakranti.org@gmail.com

प्रिय देशवासियों के लिए संदेश

"देश की सेवा करना
देश पर कोई एहसान नहीं"

– भाई राजीव दीक्षित
(अमर क्रान्तिकारी)

मेरे प्यारे देशवासियों, सदियों से विश्वगुरु और पूरी दुनिया के लिए आदर्श रहा हमारा देश, आज एक ऐसी परिस्थिति से गुजर रहा है, जिसमें मात्र इतिहास पर गर्व करने के अलावा शायद ही गर्व करने के लिए कुछ और बचा है। भारत के इस पतन के सच्चे कारणों को ना तो शिक्षा द्वारा, ना ही सरकारों द्वारा और ना ही मीडिया द्वारा बताया जाता है क्योंकि इन लोगों को सत्य बताने की इजाजत ही नहीं है।

आज के तमाम प्रिंट और इलेक्ट्रॉनिक मीडिया घटनाचार पर आधारित हैं और रोज सुबह-सुबह केवल यही बताते रहते हैं, कि किसने किसको मार दिया, कहाँ किसका बलात्कार हुआ, देश में कितना घोटाला हुआ, कहाँ आतंकवादी हमला हुआ इत्यादि। परन्तु कोई इन सब घटनाओं के पीछे चल रहे सच्चे कारणों तक नहीं पहुँचाता, समाधान की बात छोड़ ही दीजिए। यही कारण है कि लोकतंत्र के चौथे स्तंभ को लेकर अधिकतर लोगों की यही राय बन चुकी है कि मीडिया बिकाऊ है।

सत्य से ताकतवर इस दुनिया में शायद ही कुछ है, गांधी जी तो कहते थे "सत्य ही ईश्वर है।" परन्तु आज पैसे और भूलभुलैया की व्यवस्था के द्वारा सत्य को लोगों से छुपा दिया गया है। उन्हें सिर्फ उतना ही बताया जाता है जितना कि गुलामों को जानना चाहिए। जो लोग सच बोलते हैं तथा उसे समाज में स्थापित करना चाहते हैं, ऐसे लोगों को सत्ता टिकने नहीं देती एवं नष्ट कर देती है। इसलिए सच बोलने के लिए हिम्मत चाहिए।

जब हम कुछ नौजवानों को सत्य की एक किरण दिखाई दी तो हमने उस किरण के स्रोत को खोजने का प्रयास किया, तब हमने पाया कि भारत की इस वर्तमान बदहाली का कारण कुछ और ही है। हम कुछ नौजवानों ने भारतीय परिवार बनाकर स्वयं तो हर कदम सत्य की ओर बढाने का फैसला किया ही, साथ ही भारतीय परिवार के माध्यम से भारत के प्रत्येक व्यक्ति को सत्य के इस प्रकाश पुंज तक पहुँचाना चाहते हैं क्योंकि हमारा मानना है कि सच जाग गया तो समझो भारत जाग गया।

भारतीय परिवार का यह वैचारिक संवाद महीने में दो बार आप तक पहुँचाने का प्रयास किया जाएगा। आपसे आशा है कि सत्य के इस प्रयोग को आगे बढ़ाने के लिए आप न्यूनतम 10 रु. महीना का योगदान अवश्य करेंगे।

ऋषि ऋण, देव ऋण, पितृ ऋण से बड़ा बैंक ऋण?

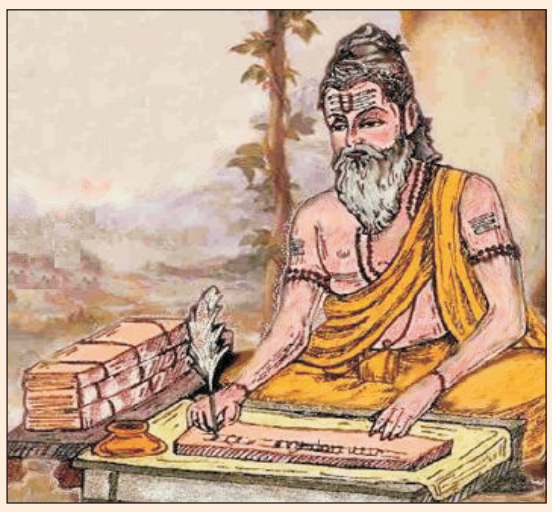

प्रत्येक मनुष्य चाहे वो किसी भी जाति, सम्प्रदाय या क्षेत्र का हो उस पर तीन ऋण प्राकृतिक रूप से माने जाते हैं–ऋषि ऋण, देव ऋण और पितृ ऋण।

किसे कहते हैं ऋषि ऋण?

ज्ञान दुनिया का सार है। ज्ञान बिना मनुष्य पशु समान है। सच्चे ज्ञान के आधार पर ही मनुष्य, परिवार, समाज और प्रकृति के बीच समन्वय किया जा सकता है। जो सच्चा ज्ञान मनुष्यों को उनके गुरु, भगवान, तीर्थंकर, पीर, पैगम्बर, ऋषि-मुनियों के माध्यम से प्राप्त हुआ है, जिसके आधार पर दुनिया में शान्ति बनी रहती है और मनुष्यों का जीवन श्रेष्ठ बन जाता है, यह प्रत्येक मनुष्य पर एक ऋण माना गया है। यह ऋण उस ज्ञान का प्रचार-प्रसार करके अगली पीढ़ी तक पहुँचाकर चुकाना होता है।

क्या है देव ऋण ?

हमारे यहाँ देव उन्हें माना गया है जो सिर्फ देते हैं और बदले में कुछ वापस लेने की अपेक्षा नहीं करते जैसे पेड, पौधे, सूर्य, चन्द्रमा, नदियाँ, झरने, सागर, पशु-पक्षी आदि जिनके बिना हमारा जीवन असम्भव है और हम पूरी तरह से इन पर आश्रित है। ये सब बदले में हमसे कुछ नहीं माँगते, इसलिए हम इनके ऋणी है। इस ऋण को चुकाने के लिए प्रत्येक मनुष्य को इस समस्त प्रकृति की न सिर्फ रक्षा करनी होती है बल्कि इन्हें और अधिक समृद्ध बनाने का प्रयत्न करना होता है।

मात्र संतान उत्पति से नहीं चुकता पितृ ऋण

प्रत्येक मनुष्य पर उनके पूर्वजों का ऋण होता है क्योंकि किसी का भी जीवन अपने पूर्वजों के बिना संभव नहीं होता। उनसे न सिर्फ जीवन मिला बल्कि उन्होंने हमें शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक रूप से पोषित किया और सशक्त बनाया और जीने के लिए एक ऐसी व्यवस्था का निर्माण किया जिससे हम बढ़िया और सहज तरीके से अपना जीवन व्यतीत करें। इस ऋण को चुकाने के लिए प्रत्येक मनुष्य को न सिर्फ पुत्र अथवा पुत्री पैदा कर अपना वंश आगे बढ़ाना होता है बल्कि अपनी संतान को हर तरीके से सक्षम बनाना होता है और उनकी अजीविका की व्यवस्था भी करनी होती है।

गैर कानूनी और काल्पनिक है बैंक ऋण

बैंक ऋण एक काल्पनिक ऋण है जो धोखे से कुछ लोगों द्वारा पूरी दुनिया को नियंत्रित करने के लिए एक षड्यंत्रकारी तरीके से लोगों पर थोप दिया गया है। यह काल्पनिक इसलिए है क्योंकि जब कोई बैंक से कर्ज लेने जाता है तो बैंक हवा में पैसे बनाकर आपके खाते में लिख देते हैं। वो पैसा न तो किसी का जमा कराया गया पैसा होता है और न ही बैंकों का अपना होता है। आप सिर्फ भ्रम में फँसकर ये मान लेते हैं कि बैंकों ने आपको कुछ दिया है और यदि आप उस काल्पनिक ऋण को देने से मना कर देते हैं तो कानूनी दाव-पेचों से आपको डरा दिया जाता है।

कहाँ चूक गये हम ?

जबसे समाज ने ऋषि, देव, और पितृ ऋण से बैंक ऋण चुकाना ज्यादा महत्त्वपूर्ण व नैतिक मान लिया, उसी दिन से दुनिया का पतन शुरू हो गया। जैसे ही हमने सच्चे ज्ञान को आगे बढ़ाना बंद कर दिया तबसे हम मूर्ख होते चले गये। अज्ञानी लोगों ने देव ऋण चुकाना अंधविश्वास घोषित कर दिया और हम विकास और विज्ञान का नाम ले-लेकर पूरी प्रकृति का नाश करते चले गये। विकास के नाम पर प्रकृति का नाश करते ही हम पितृ ऋण चुकाने में भी असमर्थ हो गये हैं और मजबूरी में अपने बच्चों को जहरीला भोजन, जहरीला पानी, जहरीली हवा देकर उनको शारीरिक रूप से कमजोर बना रहे हैं। और तो और अपनी संतान को एक सुरक्षित आजीविका देने का जो माता-पिता का कार्य था अब उसे भी सबने अपने अपने बच्चों पर लाद दिया। इसकी पूर्ति के लिए उन नन्हें बच्चों को झूठी शिक्षा के माध्यम से न सिर्फ मानसिक और आध्यात्मिक रूप से अपंग बना रहे हैं बल्कि कोल्हू के बैल की तरह जोतकर उनका बचपन और जीवन बर्बाद कर रहे हैं। ऊपर से गर्व से कहते हैं कि हम अच्छे माँ-बाप हैं। शर्म करो।

इस्लाम और ब्याज

पारह न. 3, सूरत अल-बक़रह, आयत 275
– कुरान शरीफ़
"अल्लाह ने हलाल किया खरीदो-फ़रोख्त को और हराम किया सूद (ब्याज) को!"

भारतीय ग्रामीण व्यवस्था में कर्ज देकर ब्याज मांगना प्रतिबंधित था क्योंकि हमारे पूर्वज जानते थे कि ब्याज की व्यवस्था लागू होते ही कुछ ही वर्षों में पूरी दुनिया तबाही की ओर चली जाएगी। यही बात कुरान शरीफ में बतायी गयी है कि इस्लाम में ब्याज का लेन-देन हराम है। दुनिया में जितना अन्याय, अत्याचार, अपराध, शोषण, गरीबी, हिंसा, युद्ध इत्यादि है, उनके मूल में ब्याज की व्यवस्था है। अगर पूरी दुनिया इस्लाम की इस अच्छी सीख को अपना लें तो पूरी दुनिया में शांति और अमन कायम हो जाए। ब्याज से दुनिया को नियंत्रित करने वाले लोगों ने मुसलमानों की एक गलत छवि प्रस्तुत की है ताकि सच्चाई का दमन हो सके और उनकी ब्याज की व्यवस्था चलती रहे।

कैसे चुकायें सभी ऋण

अब हमें खुद तय करना है कि हमारे लिए धोखे से पैदा किये गये बैंक ऋण की किस्तें चुकाना ज्यादा महत्त्वपूर्ण है या उन असली ऋणों को। हम भारतीय परिवार के माध्यम से देश में सभी जाति, क्षेत्र और सम्प्रदाय के लोगों को जोड़कर शुरूआत ऋषि ऋण की अदायगी से करना चाहते हैं अर्थात सत्य को जन-जन तक पहुँचाना चाहते हैं जिससे सभी अपने देवों और पूर्वजों के प्रति कृतज्ञ रहें और अपने धर्म को समझकर प्रकृति और समाज को मजबूत करें और जिससे एक खुशहाल भारत की नींव रखी जा सके। क्या आप अपना ऋषि ऋण (गुरु, भगवान, तीर्थंकर, पीर, पैगम्बर, ऋषि-मुनियों के माध्यम से प्राप्त हुआ ज्ञान) चुकाना चाहते हैं? हाँ, तो हमारे इस प्रयास को अपना प्रयास समझते हुए आगे बढ़ायें और भारतीय परिवार के एक मजबूत सदस्य बनें।

अन्दर के पृष्ठों में

अगले अंकों में

भारत एक उद्योग प्रधान देश
ग्लोबल वार्मिंग या ग्लोबल गुलामी
राष्ट्रगान : देशभक्ति या देशद्रोह
अंग्रेजों भारत वापिस आओ! (व्यंग्य)
आजाद हिन्द सरकार का संवैधानिक दर्जा क्या?
कैंसर बीमारी नहीं बिजनेस है
तेल का खेल
बलात्कार होते ही क्यों है?
हथियारों का सौदागर : अमेरिका

रजिस्ट्रेशन शुल्क 10 रूपये

अगले कुछ दिनों में भारतीय परिवार के कुछ सदस्य आपको परिवार में शामिल करने पहुँचेंगे। परिवार के सदस्य बनकर उन्हें 10 रुपये से 1000 रुपये तक का दान देकर परिवार को मजबूत बनायें।

नशे का आतंक

कुछ समय पहले नशे की समस्या पर एक फिल्म आई थी 'उड़ता पंजाब'। हांलाकि पंजाब में यह समस्या ज्यादा गंभीर है परन्तु नशे की यह भयंकर बिमारी अब पंजाब तक सीमित न रहकर पूरे देश में आग की तरह फ़ैल गयी है, इसलिए इसका नाम 'उड़ता भारत' होता तो ज्यादा सटीक होता। हमारे भारतीय समाज में किसी भी प्रकार का नशा आपत्तिजनक रहा है। लेकिन अब तो नशों के भी इतने प्रकार प्रचलित हो गए हैं कि शराब जैसा नशा तो युवाओं के लिए छोटा - सा हो गया है। अफीम, चरस, हीरोइन जैसे खतरनाक नशे जिसकी एक बार लत लगने पर युवाओं की जवानी और जीवन पूरा बर्बाद हो जाता है, आजकल देश के हर नुक्कड़ - चौराहों पर उपलब्ध है ।

नहीं मिल रहे शादी योग्य लड़के

कुछ दिन पहले हम पंजाब के भटिंडा जिले के एक कॉलेज के कार्यक्रम में गए हुए थे। कार्यक्रम के दौरान जब हम वहाँ के अध्यापकों से घुल-मिल गए तब हमें पता लगा कि कॉलेज में अधिकांश महिला अध्यापक ही थी, जो काफी उम्र की होते हुए भी शादीशुदा नहीं थी। कारण जानने पर ज्ञात हुआ कि उनको कोई सुयोग्य लड़के नहीं मिल पा रहे हैं क्योंकि यहाँ के अधिकांश लड़के नशे की लत में पड़ चुके हैं। एक सर्वे के अनुसार पंजाब के हर 4 में से 3 युवा, अथवा कहें तो लगभग हर घर में कोई न कोई इस महामारी का शिकार है।

मिट रहा है चरित्र और शौर्य

नशे में व्यक्ति स्वयं पर संयम नहीं रख पाता और यह विभिन्न अपराधों का मूल कारण बनता है। वर्ष 2014 में मुम्बई में ड्रग्स के नशे के आदी एक व्यक्ति ने 10-12 वर्ष की तक़रीबन 15 लड़कियों का यौन शोषण किया। नशे की समस्या इतनी विकराल है कि ना सिर्फ व्यक्ति को बल्कि परिवार, समाज और देश को भी खा जाती है। वीरों की इस महान भूमि में जहाँ गुरु गोविन्द सिंह जी ने सवा लाख से एक को लड़ने के लिए सक्षम बनाया था, आपको क्या लगता है, नशे में धुत्त ये नौजवान क्या सवा लाख मिलकर भी देश और धर्म की रक्षा के लिए किसी एक दुश्मन का भी सामना कर पाएंगे? तो नशे का यह सवाल व्यक्तिगत नहीं है अपितु हमारे देश और समाज के भविष्य के लिए एक बड़ा खतरा है।

कोई भी नेता, पार्टी, सरकार इस पर काबू नहीं कर पा रही है। सवाल उठता है कि वे कौन लोग हैं या कौन सी ताकतें हैं जो भारत को नशे की लत से बर्बाद करना चाहती हैं। इसको समझने के लिए थोड़ा इतिहास खोजते हैं।

ईस्ट इंडिया कम्पनी : नशे के व्यापारी

ईस्ट इण्डिया कम्पनी, जो भारत में विभिन्न प्रकार के उत्पाद लेकर आई उसमे से एक था अफीम। इस अफीम को भारत के रास्ते से चीन पहुँचाया जाता था। सन 1830 में चीन 33% हिस्सेदारी के साथ दुनिया की सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन चुकी थी क्योंकि भारत की अर्थव्यस्था जो सन 1700 में सबसे बड़ी थी उसको अंग्रेजों ने तोड़ दिया था। अब अंग्रेजों की निगाह चीन पर थी जिसे बर्बाद करने के लिए ईस्ट इण्डिया कम्पनी ने भारत के रास्ते से चीन में अफीम बेचना शुरू किया। देखते-देखते चीन की अर्थव्यस्था कमजोर होने लगी क्योंकि वहाँ के लोग अब नशे की लत में थे। यह देखते हुए वहाँ के शासक ने अफीम के व्यापार पर पाबन्दी लगाई जिसकी प्रतिक्रिया में इंग्लैण्ड ने चीन के साथ 1840 में युद्ध छेड़ दिया, जिसे अफीम युद्ध

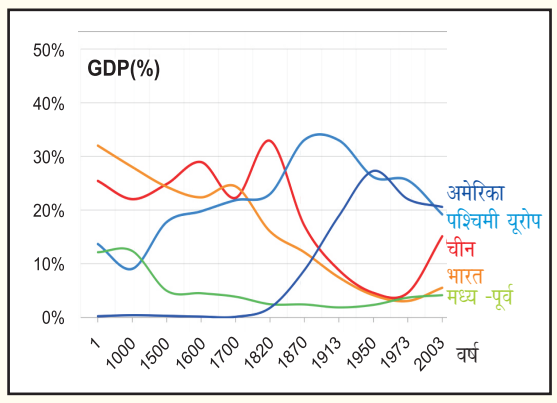

(Opium War) कहा जाता है और सन 1900 तक चीन की अर्थव्यस्था 33% से गिरकर दुनिया की अर्थव्यस्था की 10% मात्र रह गयी।

इस तरह से चीन के बाद दुनिया के कई देशों को इस जाल में फंसा लिया जिसमें इंडोनेशिया, वियतनाम, थाईलैंड, अफ्रीका और दक्षिण अमेरिका महाद्वीप के अधिकाँश देश शामिल हैं।

बर्बाद होते किशोर

भारत में क्योंकि समाज काफी मजबूत था और नशे को लेकर सतर्क भी, इन लोगों के कुचक्र में नहीं फँसा। परन्तु जैसे- जैसे लोगों ने आज़ादी के नाम पर पश्चिमी संस्कृति का अनुकरण किया वैसे ही भारत में भी इसकी जड़ें जमती चली गई। ये लोग स्कूल, कॉलेज और यूनिवर्सिटी जैसी जगहों को अपना अड्डा बनाते हैं जहाँ माता-पिता की देखरेख बिना नासमझ नौजवान इसका शिकार बन जाते हैं। **एक सर्वे के अनुसार दिल्ली के 36% स्कूली बच्चे पार्टी में ड्रग्स लेते हैं। दिल्ली और मुम्बई जैसे बड़े शहरों में तो लड़कियाँ लड़कों से भी आगे हैं।**

भारत में ऐसे ड्रग्स का नशा प्रतिबंदित है, तो प्रश्न यह उठता है कि इतना मजबूत प्रशासन, पुलिस, एंटी- नारकोटिक्स (ड्रग्स विरोधी) विभाग होते हुए भी पंजाब के घर - घर तक और पूरे देश के लगभग सभी शहरों में यह मिलता कैसे है और यह आता कहाँ से है?

नशे का मास्टरमाइंड : अमेरिका

जिस अमेरिका ने पैसे और प्रचार के बल पर अपने आपको दुनिया में शांति कायम करने वाला मसीहा घोषित कर रखा है। उसका असली चेहरा बहुत ही घिनौना है। अपनी पैसे की भूख मिटाने के लिए वह किस हद तक गिर चुका है यह आपकी कल्पना से बाहर है।

जब मुम्बई के एंटी- नारकोटिक्स विभाग के एक वरिष्ठ अधिकारी से हमारी बात हुई तो नाम गुप्त रखने की शर्त पर उन्होंने बताया कि देश की सारी अफीम अफ़ग़ानिस्तान में पैदा होती है जोकि पाकिस्तान के रास्ते पंजाब के अमृतसर तक पहुँचाई जाती है, जिसके बाद पूरे देश में इसका वितरण होता है और इस रैकेट में प्रशासन, पुलिस, फ़िल्मी सितारे और देश के कुछ बड़े नेता भी पूरी तरह से शामिल हैं। पंजाब और इससे सटे हरियाणा के लोगो ने बताया कि आपको अफीम कहीं और ना मिले तो कुछ पुलिस थानों में जाकर ले लेना।

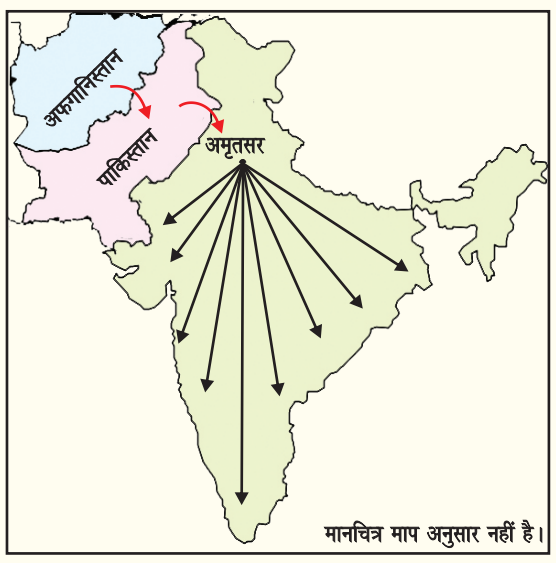

अफगानिस्तान, नशा और आतंकवाद

1980 से पहले जब अफगानिस्तान में रूस का शासन था तब वहाँ कोई अफीम पैदा नहीं होती थी। अमेरिका की मदद से अफगानिस्तान में रूस से आज़ादी की लड़ाई तो छिड़ गयी पर अमेरिका के हस्तक्षेप के बाद 1986 में अफगानिस्तान दुनिया की 40 प्रतिशत अफीम पैदा करने लगा और 1999 तक दुनिया की 80 प्रतिशत अफीम वहाँ पैदा होने लगी थी।

1996 में तालिबान सत्ता में आया और सन 2000 में अफीम के खेतों में आग लगा दी। अफीम का उत्पादन जो हर साल 3000 टन से ज्यादा होता था, 94 फीसद गिरकर 185 टन से भी कम रह गया। इस अफीम के काले धंधे में अमेरिका के बड़े बैंक घरानों और नेताओं की हिस्सेदारी थी जिससे हर साल उनका लगभग 500 बिलियन डालर का फायदा हो रहा था। अब उनके पास कोई रास्ता नहीं बचा था और आतंकवाद का नाम लेकर वो अफगानिस्तान में घुस गए।

अब अफगानिस्तान अफीम के उत्पादन के नए रिकार्ड कायम कर रहा है क्योंकि दुनिया की 90 प्रतिशत से भी ज्यादा अफीम अब वहाँ होती है।

अफगानिस्तान में अफीम के खेतों की सुरक्षा में अमेरिकी सैनिक

एक ही विकल्प : संगठित समाज

फिलिपिन्स की नशे पर सर्जिकल स्ट्राइक

ऐसे ही फिलिपिन्स देश के लोगों को भी ड्रग्स के नशे का आदि बना लिया गया था। तो हाल ही में रोड्रिगो दुतेर्ते वहाँ के राष्ट्रपति बनें जिन्होनें लोगों से वायदा किया था कि राष्ट्रपति बनने के 6 महीने के भीतर वो ड्रग्स की समस्या ख़त्म कर देंगे। जून 2016 में राष्ट्रपति बनने के बाद उसने एक सख्त अभियान छेड़ा और वहाँ के प्रशासन ने 3000 से ज्यादा ड्रग्स तस्करों को मार गिराया। इसके बाद अमेरिका खलबला गया और अब उन पर मानवाधिकार के उल्लंघन के आरोप लगाये जा रहे हैं। अमेरिका के तत्कालीन राष्ट्रपति ओबामा ने फिलिपींस का दौरा रद्द कर दिया। जबकि असलियत यह है कि अमेरिका के संगठन फिलिपींस में मानवाधिकार की आड़ में ड्रग्स के तस्करों को बचाना चाहते हैं ।

भारत में भी ड्रग्स के विरुद्ध युद्ध छेड़ने का मतलब है दुनिया के सबसे शाक्तिशाली राष्ट्र अमेरिका और उसके सबसे बदमाश लोगों से पंगा लेना और ऐसे में जबकि भारत के सभी नेता अमेरिका को आदर्श मानते हैं और अपने चुनाव अभियान के लिए इन्ही लोगों पर निर्भर रहते हैं तो क्या इनसे बदलाव की उम्मीद की जा सकती है? क्या किसी भी नेता में इतना दम है कि अमेरिका के विरुद्ध जाकर नशे के आतंकवाद से देश की रक्षा कर सकें?

अब समाधान तो बस इतना ही दिखता है कि सब मिलकर देश में एक जाग्रति अभियान चलाएं और समाज को सशक्त बनाकर नशे के इस आतंक पर जोरदार हमला बोल दें। नहीं तो यह आतंकवाद हमें कितना नुकसान पहुँचाएगा हम अंदाजा भी नहीं लगा सकते।

चौधरी प्रताप सिंह
युवा क्रान्ति

यह आज़ादी झूठी है!

15 अगस्त 1947
काला दिन

आप में से ज्यादातर लोगों को शायद यह शीर्षक रास न आए क्योंकि लगभग सभी लोग मानते हैं कि देश तो 15 अगस्त 1947 को आजाद हो गया। कुछ समय पहले तक हम भी यही मान कर जी रहे थे। किन्तु जब हमने गहन शोध और चिन्तन शुरू किया तो कुछ बातें सामने आईं, जो मैं आपके साथ साझा करना चाहता हूँ।

और वह सच ये है कि भारत 15 अगस्त 1947 को आजाद नहीं हुआ था और न ही आज तक आजाद हुआ है। इसको समझने के लिए पहले गुलामी क्या होती है इसे समझा जाये।

गुलामी मुख्यतः तीन प्रकार की होती है।

1. राजनैतिक 2. आर्थिक 3. मानसिक

राजनैतिक गुलामी

यह गुलामी वह है जिसमें डण्डे, अर्थात् ताकत के बल पर शासन किया जाता है। भारत में समाज इतना मजबूत था कि देश के भीतर राज्य का हस्तक्षेप न्यूनतम था और राज्य को प्रायः बाहरी सुरक्षा व विदेश नीति तय करने का अधिकार था। इसलिए भारत में लोग कहा करते थे - राजा कोई भी हो, हमें क्या?

भारत में राजनैतिक गुलामी अँग्रेज़ों के आने से शुरु हुई। अँग्रेज़ों ने भारत की सामाजिक व्यवस्थाओं में हस्तक्षेप करना शुरु किया।

भारत 15 अगस्त 1947 को राजनैतिक रूप से आज़ाद हुआ ऐसा बताया जाता है, पर जब हमने सूचना का अधिकार के माध्यम से भारत सरकार से पूछा कि भारत कब और किससे आज़ाद हुआ? तो इसका कोई भी जवाब सरकार ने नहीं दिया।

आर.टी.आई. पर चुप क्यों सरकार

हमारे प्रश्न निम्नलिखित थेः-

1) भारत कब आजाद हुआ?
2) भारत किससे आजाद हुआ?
3) 14 अगस्त 1947 को देश का शासक कौन था?
4) 16 अगस्त 1947 को देश का शासक कौन था?
5) 25 जनवरी 1950 को देश का शासक कौन था?
6) 27 जनवरी 1950 को देश का शासक कौन था?
7) ब्रिटिश लोग देश के शासक कब बने?
8) ब्रिटिश को देश का शासक किसने घोषित किया?
9) ब्रिटिश का शासन किस तिथि से भारत में समाप्त हुआ?
10) क्या ब्रिटिश या उनकी आने वाली पीढ़ी का आज भारत पर किसी भी तरह का शासनिक या प्रशासनिक अधिकार है? यदि हाँ तो कौन-कौन से अधिकार हैं? और किस अधिकार पर हैं?

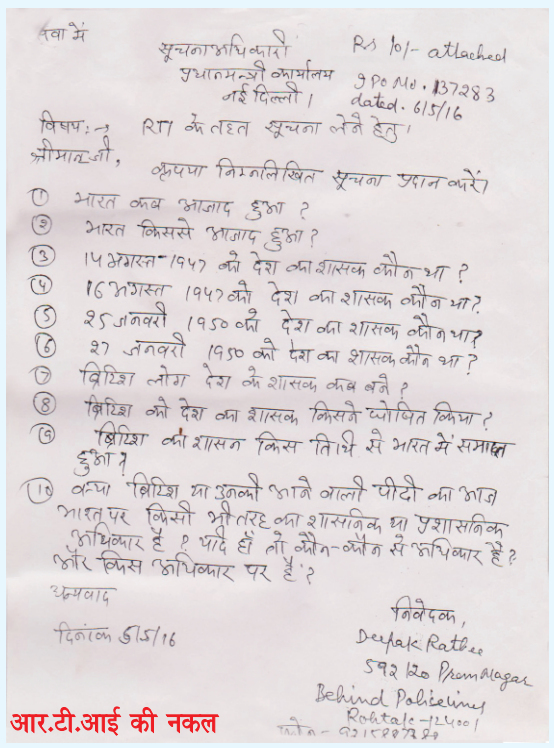

आर.टी.आई की नकल

क्या मजबूरी थी नेहरू और राजगोपालाचारी की?

सरकार ने जवाब इसलिए नहीं दिया क्योंकि 16 अगस्त 1947 को और उसके बाद भी भारत का शासक दरअसल ब्रिटेन का राजा जार्ज षष्टम ही था। इस झूठी आज़ादी (1947) के बाद भारत के गवर्नर जनरल बने राजगोपालाचारी ने ब्रिटेन के राजा जार्ज षष्टम के सेवक के रूप में ही शपथ ली थी।

माउंट बैटन के साथ सी. राजगोपालाचारी

भारत के प्रथम गवर्नर जनरल चक्रवर्ती राजगोपालाचारी की 21 जून 1948 को ली गई शपथ

मैं चक्रवर्ती राजगोपालाचारी गम्भीरता के साथ इस बात को पक्का करता हूँ कि मैं हिज मेजेस्टी किंग जार्ज षष्टम, उनके उत्तराधिकारियों के प्रति विधि के अनुसार वफादार, निष्ठावान रहूँगा और उनके प्रति पूर्ण भक्ति रखूंगा। और मैं चक्रवर्ती राजगोपालाचारी इस बात को गम्भीरता के साथ पक्का करता हूँ कि मैं गर्वनर जनरल के पद पर हिज मेजेस्टी किंग जार्ज षष्टम एवम् उनके उत्तराधिकारियों की ठीक प्रकार से सत्यता के साथ सेवा करुंगा।

ठीक इसी तरह की शपथ जार्ज षष्टम की सेवा के लिए भारत के प्रथम प्रधानमंत्री जवाहर लाल नेहरू ने भी ली थी। भारत अगर 15 अगस्त को आजाद हो गया था तो ब्रिटेन के राजा की शपथ लेने की क्या मजबूरी थी?

दिल्ली में लग रही अंग्रेजों की मूर्तियाँ

यदि आप दिल्ली जाएँ तो देखेंगे कि हज़ारों करोड़ रुपए खर्च करके भारत सरकार एक पार्क का निर्माण कर रही है। यह पार्क उसी स्थान पर बन रहा है जहाँ सन् 1911 में राजा जार्ज पंचम का राज्याभिषेक हुआ और दिल्ली भारत की राजधानी बनी। वह भूमि जिस पर पार्क बन रहा है, आज भी ब्रिटेन की रानी के अधिकारक्षेत्र में है। इस पार्क का नाम "कोरोनेशन पार्क" है, जिसमें अँग्रेज़ शासकों की मूर्तियाँ लगाई गई हैं।

दिल्ली के बुराड़ी में "कोरोनेशन पार्क" में लगी जार्ज पंचम की मूर्ति

यदि आपने दिल्ली स्थित राष्ट्रपति भवन देखा है तो उसके सामने एक खम्भा लगा देखा होगा जिस पर ब्रिटेन के राजमुकुट से लिया गया सितारे का निशान है। भारत सरकार इस निशान को 99 साल तक हटा नहीं सकती।

गणतंत्र नहीं षड़यंत्र

कुछ लोग कहते हैं कि भारत 26 जनवरी 1950 को आजाद हुआ था। तो सवाल यह है कि वर्ष 1953 में हम भारत के लोग ब्रिटिश प्रजा कैसे हो सकते हैं।

यह रहा इसका सबूत

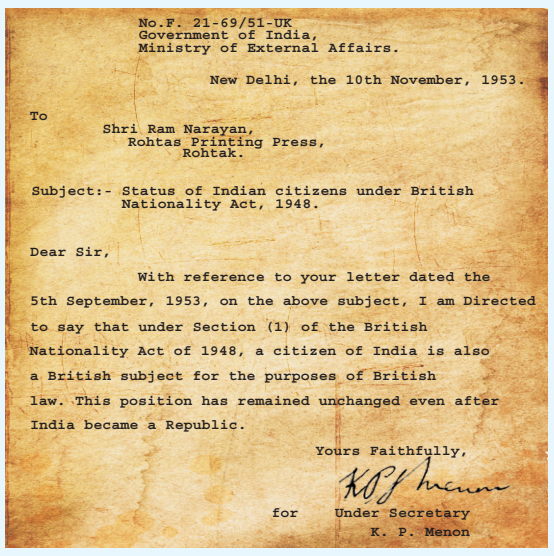

No.F. 21-69/51-UK
Government of India,
Ministry of External Affairs.

New Delhi, the 10th November, 1953.

To
Shri Ram Narayan,
Rohtas Printing Press,
Rohtak.

Subject:- Status of Indian citizens under British Nationality Act, 1948.

Dear Sir,

With reference to your letter dated the 5th September, 1953, on the above subject, I am Directed to say that under Section (1) of the British Nationality Act of 1948, a citizen of India is also a British subject for the purposes of British law. This position has remained unchanged even after India became a Republic.

Yours Faithfully,
for Under Secretary
K. P. Menon

इसमें साफ-साफ लिखा है कि 15 अगस्त 1947 में तथाकथित आजादी और 26 जनवरी 1950 के गणतंत्र बनने के बावजूद भी हम ब्रिटिश कानूनों के अन्तर्गत आते हैं और ब्रिटेन का शासक जब चाहे तब हमें दंडित कर सकता है।

अँग्रेज़ों द्वारा भारत का शोषण और लूट करने के लिए बनाई गई शासन व्यवस्था आज भी चल रही है। हिंसा व शोषण पर आधारित यह शासन व्यवस्था टिकाए रखने के लिए बनाए गए तमाम कानून अब भी लागू हैं। अगर यह झूठ है तो सरकार लिखित में दे कि 15 अगस्त 1947 को भारत से ब्रिटेन के तमाम अधिकार समाप्त हुए थे और भारत की जनता अपने राष्ट्र की सर्वोच्च शासक है। अन्यथा 15 अगस्त को देश का प्रधानमंत्री लाल किले पर झण्डा फहराने का नाटक बन्द करें।

इस विषय में हम अगले अंकों में विस्तृत चर्चा करेंगें।

99 साल की लीज पर देश की आजादी

हकीकत यह है कि 15 अगस्त 1947 को भारत में सिर्फ सत्ता हस्तान्तरित हुई थी, 99 साल की लीज़ पर! सच तो यह है कि आज भी ब्रिटेन की रानी भारत की शासक है।

ब्रिटेन की रानी
एलिजाबेथ द्वितीय

वीजा की जरूरत नहीं ब्रिटिश रानी को

क्या आप जानते हैं कि आज भी ब्रिटेन की रानी को भारत आने के लिए वीज़ा की ज़रूरत नहीं होती है। जबकि भारत के राष्ट्रपति या प्रधानमंत्री को ब्रिटेन जाने के लिए वीजा चाहिए।

**ब्रिटेन की रानी के मुकुट और छड़ी पर लगा सितारे के निशान।
राष्ट्रपति भवन के सामने लगे स्तंभ पर लगा सितारे का वही निशान भारत में ब्रिटिश साम्राज्य का प्रतीक है।**

आर्थिक गुलामी

आर्थिक गुलामी वह है जिसमें मनुष्य की जीने की स्वतंत्रता और स्वावलम्बी आर्थिक व्यवस्थाओं को तोड़ दिया जाता है। सामान्य व्यक्ति को समझ में न आने वाले ऐसे तंत्र में फँसा लिया जाता है जहाँ वह अर्थ की आवश्यकता के लिए दूसरों की गुलामी करने पर मजबूर हो जाता है। वह इस गुलामी में दुखी तो रहता है, पर इस गुलामी के तंत्र को समझ नहीं पाता।

भारत में आर्थिक गुलामी भी अँग्रेज़ों के आने से शुरु हुई। सन् 1700 के आसपास भारत की अर्थव्यवस्था दुनिया की सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था थी, किन्तु हमें मात्र इस बात पर गर्व नहीं है। जैसे आज अमेरिका को सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था माना जाता है और तमाम अमेरिकी लोग इस पर गर्व करते हैं। लेकिन हम अमेरिका को आदर्श नहीं मानते क्योंकि जिस वक्त भारत की अर्थव्यवस्था समृद्ध और स्वावलम्बी थी, वह सत्य और अहिंसा पर टिकी थी और आज की अमेरिकी अर्थव्यवस्था हिंसा और शोषण पर खड़ी है। भारत में हमारे पूर्वजों ने प्रत्येक व्यक्ति के आहार और सम्मान की सुरक्षा की थी, जिससे व्यक्ति की आर्थिक स्वतंत्रता सुनिश्चित हो; उसे किसी की गुलामी न करनी पड़े। हमे इस बात पर ज्यादा गर्व होना चाहिए ।

विकास के नाम पर लूट लिया देश

अँग्रेज़ों ने शुरूआत में कपड़ा मिलें लगाईं, लेकिन उनमें काम करने के लिए उन्हें मज़दूर नहीं मिले। भारत में लोग स्वतंत्र और स्वावलम्बी थे। अँग्रेज़ों ने विकास के नाम पर वाराणसी में गंगा नदी पर एक पुल बनवाया। पुल बनने से पहले वहाँ नदी पार कराने के लिए 4,000 नावें थीं, जिन पर 8,000 नाविक परिवार आश्रित थे। पुल बनने के बाद नाविक बेरोज़गार हुए और वे सूरत के कारखानों में गुलामी करने को मजबूर हो गए।

फिर अँग्रेज़ों ने तरह-तरह के उपायों से कारीगरी और उद्योंगों पर आधारित भारत की स्वावलम्बी अर्थव्यवस्था को तोड़ने की कोशिशें की, जैसे स्वयं के माल को कर मुक्त करना और भारतीय उत्पादों पर ज्यादा कर लगाना, कारीगरों को कच्चा माल नहीं लेने देना आदि। इस तरह अँग्रेज़ों ने स्वतंत्र और स्वावलम्बी व्यवस्था तोड़कर भारत को आर्थिक गुलामी में ढ़केल दिया। आज भी भारत के काले अँग्रेज़ भी विकास के नाम पर भारत का विनाश करने पर तुले हैं। कोई भी राजनीतिक दल हो, भारत का ऐसा विनाशकारी विकास ही चाहता है।

इस आर्थिक गुलामी के मूल में बैंकिग व्यवस्था है जिसे **"बैंकों का मायाजाल"** पुस्तक में समझाया गया है और आगे भी लेखों और पुस्तकों के माध्यम से इस षड्यंत्रकारी व्यवस्था का पर्दाफाश करने के लिए हम लोगों को जागृत करते रहेंगे।

मानसिक गुलामी

गुलामी के इस तीसरे तरीके में न तो डण्डे के बल पर गुलाम बनाया जाता है और न ही किसी तंत्र की आवश्यकता होती है। बल्कि आप खुद इस गुलामी को चुन लेते हैं। तीनों गुलामियों में मानसिक गुलामी सबसे खतरनाक है। मानसिक रूप से गुलाम होने के बाद मनुष्य आज़ादी का स्वप्न ही त्याग देता है और गुलामी से लड़ना बन्द कर देता है क्योंकि उसको आज़ादी का भ्रम हो जाता है।

समाज को मानसिक रूप से गुलाम किए बिना राजनैतिक और आर्थिक गुलामी को लम्बे समय तक कायम रखना सम्भव नहीं है। अँग्रेज़ों ने भारत आकर शिक्षा व्यवस्था, प्रचार तंत्र, आधुनिक विज्ञान आदि के माध्यम से हमें यह समझा दिया कि हमारे पूर्वज मूर्ख थे और अगर हमें सही रास्ते पर चलना है तो अँग्रेज़ों द्वारा दी गई जीवन शैली को अपनाते हुए आगे बढ़ना चाहिए। **आज के अधिकांश नौजवान पढ़-लिखकर अपने पूर्वजों को मूर्ख और अमेरिका को अपना आदर्श मानते हैं और भारत को भी अमेरिका बना देना चाहते हैं ।**

इन गुलामियों के कारण समाज और परिवार इस हद तक टूट चुका है कि प्रत्येक व्यक्ति भय के माहौल में जीने को बाध्य है। समाज में आज रोज़गार, न्याय, प्रेम, सम्मान आदि की व्यवस्था समाप्त हो गयी है और समाज में ईर्ष्या, लूट, हत्या, शोषण व्याप्त है और ऐसी स्थिति में इन्सान आत्महत्या तक करने को तैयार है।

अपने ही देश में यदि हम असुरक्षित और भयभीत हैं, तो फिर ये कैसी आज़ादी? इसलिए हम कहते हैं कि यह आज़ादी झूठी है!

दुनिया में 3 तरह के लोग होते हैं।

1. जो सत्य को सत्ता मानते हैं।

ऐसे श्रेष्ठ लोगों की संख्या दुनिया में बहुत कम है। ऐसे लोग क्योंकि सत्य को सर्वोच्च मानते हैं और उसे पहचानने की क्षमता रखते हैं, अगर दुनिया में उनको नेतृत्व मिले तो विश्व को नई ऊँचाइयों तक ले जाते हैं।

2. जो सत्ता को सत्य मानते हैं।

दुनिया में अधिकतर सामान्य लोग इस श्रेणी में आते हैं। ऐसे लोगों में सत्य को पहचानने की शक्ति नहीं होती है और इसलिए सत्य जानने के लिए सत्ता पर निर्भर रहते हैं अर्थात जो सत्ता कहे उनके लिए वही सत्य होता है।

3. जो भ्रम को सत्य मान लेते हैं।

आधुनिक शिक्षा प्रणाली के आने से इस श्रेणी के लोगों की संख्या में बहुत ज्यादा इजाफा हुआ है। ऐसे लोग बहुत ज्यादा मूर्ख होते हैं परंतु अपने आप को सबसे ज्यादा बुद्धिमान समझते हैं। ये किसी भी सत्य या सबूत को नहीं मानते। सत्य को पहचानना तो दूर की बात, अगर सत्ता भी कह दे तो भी नहीं मानते। दरअसल उनको वहम हो गया होता है और हमारे यहाँ एक कहावत है कि दुनिया में हर बीमारी का इलाज हो सकता है पर वहम का नहीं।

हमने जो बात आपके सामने रखी हैं अगर आप पहले किस्म के लोगों में से हैं तो आप इस सत्य को समझ जायेंगे और हमारा साथ भी देंगे

परन्तु अगर आप दूसरे किस्म के लोगों में से हैं तो शायद अभी हम पर आपको यकीन ना आये। इसलिए आप स्वयं सरकार से आर.टी.आई. के माध्यम से वो सवाल पूछें जो हमने भी पूछे। आपको यकीन आ जायेगा। उसके बाद आप हमारा साथ देंगे।

और हाँ अगर आप तीसरे प्रकार के लोगों में से हैं तो हमारे पास आपका कोई इलाज नहीं है। आपको भ्रम नामक एक बीमारी हुई है जिसका इलाज आपको खुद से ही खोजना होगा।

न पूरा हुआ शहीदों का सपना और न मिला सम्मान

देश को आजाद कराने की कोशिश में लाखो क्रांतिकारियो ने बलिदान दिया

जिन अंग्रेजों को भगाने के लिए, लाखों क्रांतिकारियों ने शहादतें दी, जिस एक सपने के लिए उन्होंने अपना सब कुछ न्योछावर कर दिया, आज वह पूछ रहे होंगे कि आखिरकार भारत कब आज़ाद होगा। उनका सपना कब पूरा होगा।

तुम मुझे खून दो
मैं तुम्हे
आजादी दूँगा

जिस देश की आज़ादी के लिए नेताजी सुभाष चन्द्र बोस ने लोगों से खून माँगा तो लोगों ने जोश और जज्बे के साथ अपना तन- मन- धन सब कुछ दे दिया। क्या आपके खून में आज भी वही उबाल है?

भारत के एक क्रान्तिकारी सोहनलाल को फाँसी होनी थी तब उनके पास एक प्रस्ताव आया कि यदि वे ब्रिटेन की रानी से माफ़ी माँग ले तो उनको फाँसी नहीं होगी। इस पर सोहनलाल ने कहा कि गलती अंग्रेजों ने की है जो हमारे देश में आए, माफ़ी वो माँगे और सोहनलाल को फाँसी हो गई। क्या भारतीयों में आज भी सोहनलाल जैसा स्वाभिमान जिन्दा है?

भारत की आज़ादी के लिए सौ जन्म भी लेंगे यह कह कर रामप्रसाद बिस्मिल फाँसी पर चढ़ गए, अंग्रेजों के हाथ नहीं लगूंगा इस प्रतिज्ञा के साथ लड़े चँद्रशेखर आजाद शहीद हो गये। क्या आप में वही संकल्प, साहस और शौर्य बचा है।

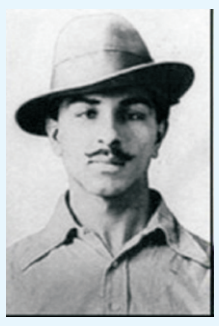

मात्र 23 साल की उम्र में हँसते- हँसते फाँसी चढ़ने वाले भगत सिंह और उनके साथियों जैसा देशप्रेम आपके खून में है? भगत सिंह के आदर्श, जिनका फोटो वो अपनी जेब में ले कर घूमते थे, करतार सिंह सराबा मात्र 19 साल की उम्र में अंग्रेजों से लड़ने की रणनीति बनाते हैं और उनको फाँसी हो जाती है। क्या वो जूनून देश की आज़ादी के लिए आपके अन्दर आता है? लन्दन में जाकर डायर को मारा और जलियांवाला बाग का बदला लिया, क्या भारत को आजाद कराने के लिए उधम सिंह जैसा अदम्य साहस आपके अन्दर है?

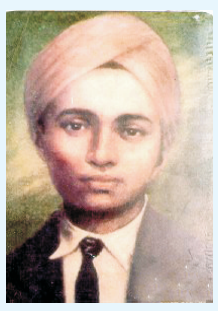

आखिरकार कौन करेगा शहीदों का सपना पूरा?
पूर्ण रूप से कब आजाद होगा देश?

कब मिटेगा अश्फाक का दर्द?

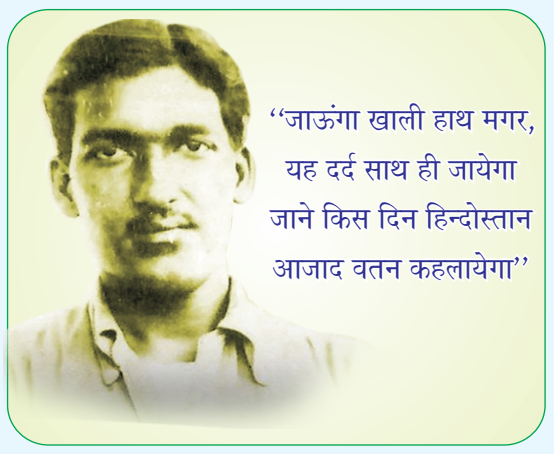

"जाऊंगा खाली हाथ मगर,
यह दर्द साथ ही जायेगा
जाने किस दिन हिन्दोस्तान
आजाद वतन कहलायेगा"

अश्फाक उल्ला खां, जो लाखों क्रान्तिकारियों का सपना आँखों में बसाये फाँसी पर झूल जाता है। उन लाखों क्रान्तिकारियों की आँखों का वो सपना पूरा करने की तमन्ना आपके अन्दर भी है क्या?

तो आओ संकल्प करें

**"शहीदों के सपने को अपना सपना बनायेंगे,
इसे पूरा करने के लिए जी जान हम लगायेंगे
सौगंध है इस पवित्र मिटटी की, खून दे कर भी,
अंग्रेजो को हराएंगे और भारत माँ को आजाद कराएँगे"**

साथियों अन्धेरे को कोसने से बेहतर है एक चिराग जलाना। हम इस सिद्धान्त को मानने वालों में से हैं। इसिलए युवा क्रान्ति संगठन के परचम तले हम खुद को व्यवस्थाओं को कोसने मात्र तक सीमित न करते हुए सम्पूर्ण व्यवस्था परिवर्तन की इस लड़ाई को आगे बढ़ाते हुए सच्ची आज़ादी लाने के लिए संकल्पबद्ध हैं। परन्तु यह कार्य बहुत बड़ा है। आपका साथ मिले बगैर यह पूरा नहीं हो पाएगा। हमें आपसे तन-मन-धन से सहयोग मिलने का पूरा विश्वास है।

यह हमारे क्रान्तिकारी संदेश का भूमिका अंक है। आपका सहयोग मिला तो इसका प्रथम अंक जल्द प्रकाशित होगा। हमें यकीन है कि 100वें अंक पर पहुँचने तक हम और आप मिलकर भारत को हर तरह की गुलामी से मुक्त करा लेंगे और फिर उसके बाद एक नए आज़ाद समाज का निर्माण करने की ओर आगे बढ़ेंगे, जिसमें साम्प्रदायिकता, जातिवाद, क्षेत्रवाद आदि से ऊपर उठकर व्यक्ति, समाज और प्रकृति के बीच समन्वय हो सके। तभी हम सब प्रेम व आनन्द के साथ स्वतंत्र और स्वावलम्बी जीवन जी पाएँगे।

इसी के साथ ही हम सभी साथ मिलकर भारत को विश्वगुरु बनाते हुए दुनिया को भी एक नई दिशा और उम्मीद दे पायेंगे।

-संजय सामाजिक
युवा क्रान्ति

विकास के मायने क्या ?

विकास शब्द की परिभाषा क्या है? प्रकृति से संस्कृति की तरफ जाना तो विकास है, लेकिन विकृति की तरफ जाना भी विकास है क्या? पोषक बनना तो विकास है, पर शोषक बनना भी विकास है क्या? पूरक, सहयोगी, दयावान, करुणावान, प्रज्ञावान बनना तो विकास है, परन्तु छीनना, लूटना, उत्पीड़ित व आतंकित करना, हिंसक व संवेदनहीन बनना भी विकास है क्या? प्राकृतिक सम्पदा का सदुपयोग करना तो विकास है, परन्तु अतिभोग द्वारा संसाधनों का दुरूपयोग करना भी विकास है क्या? खासतौर पर, मानसिक तनाव का बढ़ना भी विकास है क्या?

आज करोड़ों लोगों से धरती, पानी, हवा, कुदरत की अनमोल चीज़ें भी छिनती जा रही हैं। हम पूछना चाहते हैं क्यों बना रहे हो ऐसी व्यवस्था जिसमें गिनती के लोगों के हाथ में सारे साधन-सम्पत्ति आ जाए व करोड़ों लोग मूल आवश्यकता के लिए भी तड़पें, पशु से भी बदतर जीवन जीने के लिए मजबूर हों? आखिर क्यों?

लोकतंत्र का दुश्मन विकास

क्या इसे ही विकास कहते हैं? क्या इसे ही लोकतंत्र (लोगों का, लोगों के लिए, लोगों के द्वारा शासन) कहते हैं? क्या इसके लिए ही अनेक वैज्ञानिकों ने अपनी ज़िन्दगी को दाँव पर लगाया? क्या इसी के लिए शहीदों ने कुर्बानियाँ दी? क्या इसी के लिए हमने आज़ादी पाई थी?

जहाँ तक मैं समझता हूँ, शहीदों व महापुरुषों ने कहा था कि आज़ादी का मतलब है कि एक ऐसी व्यवस्था का बनना जिसमें अन्तिम व्यक्ति को जीवन की मूल आवश्यकताएँ सम्मान के साथ मिलेंगीं तथा हर व्यक्ति को मानव के रूप में गरीमापूर्ण जीवन जीने का अवसर उपलब्ध होगा।

पर्यावरण विरोधी विकास

पर्यावरण का संकट पूरी सभ्यता के लिए खतरा बन गया है। क्या इससे कोई बचेगा? विज्ञान व तकनीकी का मकसद तो व्यक्ति को सहयोग देना व सुखी करना था पर नासमझी के कारण इसकी जगह बन गए आतंक के अड्डे! स्थूल हिंसा करने वाले तो जब आएँगे, तब आएँगे, शरीर तो एक दिन मरेगा ही, परन्तु यहाँ तो व्यक्ति पल-पल मर रहा है। मानसिक हिंसा हर पल हो रही है। उसमें व्यक्ति / परिवार / समाज सब कुछ टूटता जा रहा है, साथ ही कुदरत की अनमोल देन हवा, पानी, धरती भी छिन रही है। क्या यही है विकास?

समाज में बढ़ता अविश्वास

जगह-जगह लिखा होता है कि किसी पर विश्वास न करें, अपने आस-पास देख लो कहीं बम तो नहीं? ज़हरीली, नशीली वस्तु तो खाने में तो नहीं मिला दी?

क्या हो गया व्यक्ति को? भाई का भाई पर, मित्र का मित्र पर, मरीज़ का डॉक्टर पर, छात्र का शिक्षक पर, फरियादी का वकील और जज पर, जनता का नेता पर, पिता का पुत्र पर... सभी पर अविश्वास है!

कुल मिलाकर आदमी का आदमी, परिवार, समाज व प्रकृति पर अविश्वास! और हम कहे जा रहे हैं विकास चाहिए।

अरे भाई, कैसा विकास? जिस विकास की दौड़ में आदमी ही नहीं बचा, विश्वास ही नहीं बचा, तो विकास का क्या मतलब मित्रों?

कहीं यह विकास की दौड़ एकतरफा तो नहीं हो गई, अधूरी तो नहीं है। मैं कौन? मेरा प्रयोजन क्या और मेरी भूमिका क्या? इसका उत्तर पाए बिना कहीं यह विकास की दौड़ आदमी के लिए भस्मासुर न बन जाए। देख लो, देश से लेकर दुनिया तक, परिवार से लेकर समाज तक कितना भय व तनाव है, कितना ड़रा हुआ है आदमी आदमी से।

आज आदमी - आदमी से भयभीत है, परिवार - समाज से भयभीत है, वातावरण - प्रदूषण से भयभीत है, सवाल उठता है क्यों?

इसलिए विकास की बात करते समय क्या हमें इन बिन्दुओं पर नहीं सोचना चाहिए? लेकिन कहीं पर भी इसकी चर्चा नहीं है।

गलती से किसी युवा के अन्दर यह सवाल उठ जाए कि मैं कौन हूँ? मेरा प्रयोजन क्या? मेरी भूमिका क्या होनी चाहिए....? तो माता-पिता को डर लगने लगता है कि कहीं बच्चा रास्ता तो नहीं भटक गया?

विनाश का दोषी कौन

सबको एक ही विकास पता है कि अधिक से अधिक साधन कैसे प्राप्त हों, बैंक-बैलेंस कैसे बढ़े? कितना बढ़े और क्यों बढ़े, यह नहीं मालूम, बस बढ़ना चाहिए।

ज्ञानी, विज्ञानी, अज्ञानी तीनों खड़े हैं इस विकास की लाइन में, फिर बताओ तनाव, भय, युद्ध, आतंक व हिंसा होगी या नहीं? कौन रोकेगा इसे?

मैं पूछता हूँ, क्यों बनाई जा रही है ऐसी व्यवस्था जिसमें मुट्ठी भर लोग अरबपति से खरबपति बनते जा रहे हैं व करोड़ों लोगों से कुदरत की अनमोल चीज़ हवा और पानी तक भी छिनता जा रहा है। पानी खरीदकर पीना विकास है या विनाश?

क्यों सिमटती जा रही है सारी सम्पदा मुट्ठी भर लोगों के हाथों में? जबकि गाँधीजी, जिनका आज सब नाम लेते हैं, हिन्द स्वराज में कहते हैं कि पैसे का डंक साँप के डंक से ज्यादा ज़हरीला है। जब साँप काटता है तो हमारा शरीर लेकर हमें छोड़ देता है परन्तु जब पैसे की दौड़ डसती है तो वह शरीर के साथ-साथ विवेक, मन, आत्मा व सब कुछ ले लेने के बाद भी पीछा नहीं छोड़ती व आने वाली पीढ़ी की मानसिकता भी विकृत बना देती है।

मैं पूछता हूँ कि हवा, पानी, धरती, अनाज, फल, सब्ज़ी, दूध व समूचे पर्यावरण को किसने ज़हरीला बनाया? विकसित कहे जाने वाले लोगों ने या जिन्हें हम अविकसित कह रहे हैं उन्होंने?

बदलनी होगी विकास की परिभाषा

विकास, जो हमें सुख व समृद्धि की तरफ ले जाने के लिए था, वही आज पल-पल मारने के लिए है, यह मानवता पर बोझ बन गया है।

शिक्षा, चिकित्सा, न्याय व चुनाव के आधुनिक तंत्र ने बाँट दिया आदमी को, मार दिया इन्होंने इन्सानियत को! बहुत पीछे छोड़ दिया इन्होंने इतिहास के ज़ालिमों को! क्योंकि पहले ज़ालिमों की मारने-काटने की एक सीमा थी। पर अब तो विज्ञान व तकनीक की वजह से - एक बटन दबाओ तो सब कुछ स्वाहा!

इसलिए मित्रों, सोचना होगा कि विकास क्या है? उसकी दशा व दिशा क्या होगी? तभी जाकर मानव जाति का प्रयोजन व भूमिका पूरी होगी। नहीं तो कहीं विकास की धुन में हम अनजाने में पृथ्वी का सर्वनाश न कर बैंठे।

सत्यप्रकाश भारत
सामाजिक चिंतक

एक सदी पहले तक दुनिया में जिस रिफाइन्ड तेल का अस्तित्व तक नहीं था, आज जाने अनजाने में बीमारियों के इस मूल कारण को लगभग प्रत्येक घर में बड़े ही सहज तरीके से प्रयोग किया जाने लगा है। लगभग प्रत्येक घर में रिफाइन्ड तेल की घुसपैठ मात्र एक संयोग नहीं है, बल्कि इसके पीछे दुनिया के बहुत ताकतवर लोगों का एक गहरा षड़यंत्र है। जिसमें नेशनल एवं मल्टीनेशनल कंपनियां विश्वभर की सरकारें एवं बड़ी-बड़ी दवाईव कंपनियांश ामिलहै ैइ सष ाड़यंत्रक ेय दि नहीं समझा गया तो जाने-अनजाने में ना सिर्फ आप अपने आपको बल्कि अपने परिवार के लोगों को भी बीमार करके, उनको अकाल मृत्यु को सौंपने के दोषी होंगे।

सच्चा धन - निरोगी काया

भारतीय समाज में धन की व्याख्या करते समय पहला धन निरोगी काया को बताया गया है। लेकिन पैसे कमाने के दौड़ में फँसे लोग उस सही जीवनशैली को भी भूल गये हैं, जिससे वे स्वस्थ रह कर इस सच्चे धन को अर्जित कर सके। तथाकथित विकास के नाम पर हमारे सामने प्रस्तुत किया गया यह रिफाइन्ड तेल शुरू में **यह दावा ठोक रहा था कि इसके प्रयोग से दिल की बीमारियाँ कम होती है पर हाल की रिसर्चों में यह सामने आया है कि रिफाइन्ड तेल ही उन सभी हजारों भयंकर बीमारियों का मुख्य कारण बनता है, जिसमें से डी. एन. ए. डैमेज, आर. एन. ए. नष्ट होना, हार्ट अटैक, हार्ट ब्लाकेज, बी. पी., सुगर, लकवा, ब्रेन डैमेज, नपुंसकता, कैंसर, हड्डियों का कमजोर होना, जोड़ों का दर्द, किडनी फेल होना, लीवर खराब होना, कैलोस्ट्रोल बढ़ना, त्वचा रोग, पेट की बीमारियाँ इत्यादि शामिल हैं।**

हमारी शारीरिक संरचना

हमारा शरीर करोड़ो सेल्स (कोशिकाओं) से मिल कर बना है, शरीर को जीवित रखने के लिए पुरानी कोशिकाएं नई कोशिकाओं से बदलती रहती है। नई कोशिकाओं को बनाने के लिए शरीर खून का प्रयोग करता है। यदि हम रिफाइन्ड तेल का उपयोग करते हैं तो खून में टाक्सिन की मात्रा बढ़ जाती है, इससे शरीर को नये सेल (कोशिका) बनाने में अवरोध आता है, जिससे कई बीमारियां उत्पन्न होनी शुरू हो जाती है।

रिफाइन्ड तेल बनता कैसे है

किसी भी तेल को रिफाइन्ड करने में 6 से 7 केमिकल का प्रयोग किया जाता है और डबल रिफाइन्ड करने में यह संख्या बढ़कर 12 से 13 हो जाती है। इनमें से कुछ प्रमुख केमिकल, कास्टिक सोडा, गंधक, पोटेशियम, तेजाब व अन्य खतरनाक ऐसिड आदि प्रयोग किये जाते हैं, ताकि तेल से अशुद्धता बाहर हो जाए और इस प्रक्रिया में तेल के साथ कास्टिक सोडा को मिश्रित करके 180° फारेन हाइट पर गरम किया जाता है, जिससे इस तेल के सभी पोस्टिक तत्त्व नष्ट हो जाते हैं। इसकी अगली प्रक्रिया में तेल के साथ निकेल और हाइड्रोजन को मिश्रित करके हिलाया जाता है और इसके बाद इस तेल को सात-आठ बार और गरम और ठंडा किया जाता है। इस तरीके से रिफाइन्ड तेल के अन्दर के सभी मूल तत्व नष्ट हो जाते हैं और भोजन का यह अमृत तुल्य तेल रिफाइन्ड होकर विष बन जाता है।

सरकार ने दे रखी पाम ऑयल मिलाने की छूट

आज नामी-गिरामी कंपनियों के खाद्य तेलों में पाम आयल मिलाया जाता है। पाम ऑयल को रिफाइन्ड तेल बनाने के लिए सोयाबीन का उपयोग किया जाता है। सोयाबीन दलहन है ना की तिलहन। दलहन में मूँग, मोठ, चना व सोयाबीन आदि सभी प्रकार की दालें होती हैं। तिलहन में तिल, सरसों, मूंगफली, बादाम आदि आता है। सोयाबीन की एक यह खासियत होती है कि वह प्रत्येक तरल पदार्थ को सोख लेता है। पाम ऑयल देखने में एकदम लाल और गाढ़ा तरल होता है, उसमें साबुत सोयाबीन डाल दिया जाता है जिससे सोयाबीन बीज उस पाम ऑयल की चिकनाई सोख लेता है और फिर सोयाबीन की पिसाई होती है। जिससे चिकना पदार्थ तेल और आटा अलग हो जाता है। आप चाहें तो किसी भी तेल निकालने वाले के पास सोयाबीन ले जाकर उससे तेल निकालने को कहे पर मुँह मांगी कीमत देने पर भी वो आपको तेल निकाल कर नहीं देगा क्योंकि सोयाबीन का सिर्फ आटा बनता है तेल नहीं। सूरजमुखी, चावल की भूसी (चारा) आदि के तेल रिफाइन्ड प्रक्रिया के बिना नहीं निकाला जा सकता है। अत: ये सभी रिफाइन्ड तेल जहरीले ही हैं।

क्या कहता है आयुर्वेद

तेल शब्द ही जब तिल से बना है और आयुर्वेद के अनुसार भी सबसे श्रेष्ठ तेल तो तिल का ही तेल होताह ैए ेसाब तलायाग याह ै,त ेस र्वप्रथमह में तिल का तेल ही उपयोग में लाना चाहिए। लेकिन इसकी उपलब्धता ना होने पर पौष्टिक एवं शरीर को निरोगी रखने वाला कच्ची घानी (सरसों, नारियल, मूंगफली, बादाम आदि) का तेल इस्तेमाल करना चाहिए। पर आजकल लगभग सभी कंपनियां अपने प्रोडक्ट पर कच्ची घानी का तेल ही लिखती है, जबकि यह बिल्कुल झूठ है और सरासर धोखा है। कच्ची घानी का मतलब है कि लकड़ी की बनी हुई ओखली और लकड़ी का ही बना मूसल होना चाहिए। कच्ची घानी की प्रक्रिया में लोहे का घर्षण नहीं होना चाहिए।

निर्णय अब आप का

अब तो आपको पता चल ही गया होगा कि भारत के लोगों के तेल का कारोबार छीनकर मल्टीनेशनल कंपनियों ने लोकलुभावने विज्ञापन से प्रलोभन देकर हीरो, हीरोइन, खिलाड़ियों एवं विदेशी दवाइयों की दलाली कर रहे पापी डॉक्टरों द्वारा आपको जिस तेल की ओर आकर्षित किया है, असल में वो तेल नहीं जहर है।

अब फैसला आपके हाथ में कि इस जहर को आप प्रतिदिन अपने खाने में मिलाकर अपने परिवार की धीमी **मौत का तड़का** लगाएंगे या इसका बहिष्कार कर स्वस्थ जीवनशैली अपनाएंगे। हमें आपसे यह भी आशा है कि ज्यादा-से-ज्यादा लोगों को आप इस सच्चाई से अवगत कराएंगे।

अनुराग पाठक
युवा क्रान्ति

राजा चुन कर तुम्हीं ने भेजा। तुम्हीं भरो हरजाना जी

आपको शायद इस बात का गर्व हो कि आपके पास वोट देने का अधिकार है। शायद इस बात का भी गर्व हो कि आप अपने वोट के जरिए सरकार बदल सकते हैं।

लोकतंत्र के नाम पर आपको पिछले 70 सालों से यह अहसास कराया जा रहा है कि आपकी भी इस देश में कोई हैसियत है।

हकीकत यह है कि आपको अब तक जानबूझ कर एक मायावी दुनिया के मुगालतों में बन्धक बनाकर रखा गया है। पाँच साल में एक दिन आपकी आवभगत शहंशाह की तरह की जाती है। वोट देने के बाद शहंशाह के कपड़े उतार दिए जाते हैं। एक बार फिर आपको बेबस और लाचार आदमी की ज़िन्दगी जीने के लिए किस्मत के भरोसे छोड़ दिया जाता है। लोकतंत्र के नाम पर चलने वाला यह दर्दनाक और बेरहम सीरियल कभी खत्म नहीं होता, हर पाँच साल में निर्माता, निर्देशक और फनकार बदल जाते हैं। अवाम की रुलाई और धुनाई बदस्तूर जारी रहती है।

आखिर, वोट देकर आप हासिल क्या करते हैं? एक बेहतर ज़िन्दगी के सपने तो बहुत दूर की बात रही, ज़िन्दा रहने की न्यूनतम ज़रूरतों के लिए भी आपको हाथ में कटोरा लेकर खड़ा रहना पड़ता है। आप भीख माँगने के लिए तैयार हैं, लेकिन जिन लोगों को आपने वोट दिया है, उनके पास आपको भीख देने के लिए भी समय नहीं है। उनका सारा समय और ऊर्जा अपने मालिक के लिए समर्पित है।

अक्सर यह तर्क दिया जाता है कि आपने वोट नहीं दिया, तो गलत आदमी संसद या विधानसभा में जाएगा। इस देश के भोले-भाले और गरीब आदमी के साथ कब तक छल किया जाता रहेगा?

"जब चुनाव एक चोर और लुटेरे के बीच करना है तो वोट देने या नहीं देने क्या फर्क पड़ता है? वज़ीर कोई भी बने पढ़े-लिखे नौजवानों को तो एक अदद नौकरी के लिए दर-दर भटकना ही है।"

ऐसा भी नहीं है कि कोई नया प्रयोग करना बाकी है। हमने इन 70 सालों में सभी रंग, नारे और परचम वाले राजनीतिक दल को आज़माकर देख लिया है। एक भी राजनैतिक पार्टी ऐसी नहीं बची, जिसे सत्ता पर हमने काबिज़ न किया हो। लेबल बदला - लूट का सिलसिला नहीं बदला, चेहरे बदले - जुल्म और शोषण का रवैया नहीं बदला!

बड़े फक्र के साथ कहा जाता है कि भारत दुनिया का सबसे बड़ा लोकतंत्र है। बड़ा है तो सबको रोज़ी-रोटी मिलनी चाहिए थी। अगर ऐसा नहीं हो सका है तो लोकतंत्र का महिमा-मण्डन, गुणगान जनता के समक्ष फरेब है। ऐसा लोकतंत्र हमारे किस काम का जो बहन-बेटियों को इज्जत से जीने का अवसर देने में नाकाम है।

वॉल मार्ट और विदेश कम्पनियों के रिटेल बाज़ार में निवेश करने के मुद्दे पर एक पत्रकार ने अण्णा हजारे से सवाल किया, तो उन्होंने कहा - "वे सेवा करने नहीं आ रहे हैं, वे मेवा खाने आ रहे हैं।"

यही बात हमारे राजनेताओं पर भी लागू होती है। चुनाव उनके लिए व्यवसाय है। सिर्फ व्यवसाय, व्यवसाय के अलावा और कुछ भी नहीं।

अगर ऐसा नहीं है, तो महलों में रहने वाले लोग चिलचिलाती हुई धूप में, ऊबड़-खाबड़ सड़कों पर रोड शो और रथ-यात्राओं में अपना पसीना क्यों बहा रहे हैं? जात-पात और मज़हब के नाम पर लोगों को बाँटने का काम क्यों कर रहे हैं? ज़ाहिर है कि जो चुनाव में जीतेगा, दस प्रतिशत कमीशन उसे मिलेगा। अय्याशियाँ उसके खाते में जाएँगी। जुल्म करने की ताकत मिलेगा।

जब सब-कुछ लोकतांत्रिक प्रक्रिया के तहत हो, जनता की मंजूरी से ही और चुनाव के मार्फत हो।

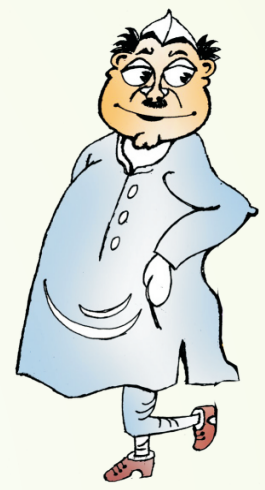

एक बड़ा खुलासा.....!

क्या बैंकों में आपका पैसा सुरक्षित है?

देश हित में इस पुस्तक को एक बार अवश्य पढ़ें

देशभक्तों के लिए बिल्कुल मुफ्त

- दुनिया के सबसे गहरे षड़यन्त्र का पर्दाफाश करते हुए यह पुस्तक 125 करोड़ भारतीयों की आंखें खोल देगी।
- आई.आई.टी. (I.I.T.) दिल्ली के छात्र रवि कोहाड़ द्वारा लिखित इस पुस्तक को पढ़कर मुंबई के शेयर मार्केट से लेकर देश-विदेश के बड़े-बड़े वित्त विशेषज्ञ भौंचक्के।
- इस पुस्तक को पढ़े बिना समझ में नहीं आयेगा कि कोई भी सरकार आ जाए पर बेरोजगारी, गरीबी, कर्ज़, मंहगाई और मंदी क्यों खत्म नहीं होती?
- हर भारतीय को कर्जदार बनाकर देश का लाखों करोड़ रुपया, सोना और प्राकृतिक संसाधन कैसे लूटे जा रहे हैं, इसकी गहरी पड़ताल।
- नोटबन्दी का असली खेल डूबते बैंकों को बचाना था जो इस पुस्तक को पढ़े बिना समझ में ही नहीं आयेगा।

ब्याज और इस्लाम

पारह न. 3, सूरत अल-बक़रह, आयत 275 – कुरान शरीफ़

"अल्लाह ने हलाल किया खरीदो–फ़रोख्त को और हराम किया सूद (ब्याज) को!" मुसलमानों, अल्लाह का हुक्म है और उसके नबी की हिदायत है कि इस्लाम में ब्याज का लेनदेन हराम है पर आज लगभग सभी लोग इस ब्याज के जाल में फंसे हुए हैं और जाने-अनजानें में सूदखोरी को बढ़ावा दे रहे हैं। ये कैसे है और क्यों है, ये समझने के लिए इस किताब को जरूर पढ़ें।

–नोमान जमाल

आखिर क्या था आजाद हिन्द सरकार की ताकत का असली रहस्य!

अपनी खुद की करेन्सी?

देश के बैंकों का सच

जानना है तो यह किताब पढ़ना जरूरी है।

– अन्ना हजारे

BankJaal.com से मुफ्त पढ़ें।

इस पुस्तक को घर मंगाने के लिए अपना
1. नाम, 2. उम्र, 3. पूरा पता (पिन कोड सहित)
87450 26277 पर SMS करें

सहयोग राशि
₹50/-